कोयला एवं लिग्नाइट खदानों की स्टार रेटिंग

संदर्भ: कोयला मंत्रालय ने कोयला और लिग्नाइट खदानों की स्टार रेटिंग के पंजीकरण और स्व-मूल्यांकन की समय सीमा 15 जुलाई से बढ़ाकर 25 जुलाई 2023 कर दी है।

उद्देश्य: इसका उद्देश्य खदानों के बीच प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करना और वैधानिक आवश्यकताओं, उन्नत खनन प्रौद्योगिकी के उपयोग और आर्थिक उपलब्धियों के पालन का आकलन करके असाधारण प्रदर्शन को स्वीकार करना है।

मुख्य पैरामीटर: स्टार रेटिंग नीति निम्नलिखित सात प्रमुख मापदंडों के विविध कारकों पर विचार करके खादानों का आकलन करेगी:

1. प्रौद्योगिकियों को अपनाना
2. सर्वोत्तम खनन पद्धतियाँ
3. आर्थिक प्रदर्शन
4. पर्यावरण संबंधी पैरामीटर
5. खनन कार्य
6. पुनर्वास एवं पुनर्स्थापन
7. कार्यकर्ता-संबंधित अनुपालन और सुरक्षा एवं संरक्षा

प्रक्रिया:

- भाग लेने वाली खदानें स्व-मूल्यांकन प्रक्रिया से गुजरेंगी।
- शीर्ष 10% प्रदर्शन करने वाली खदानों को एक समिति द्वारा निरीक्षण के माध्यम से सत्यापन से गुजरना होगा।
- शेष 90% खदानें ऑनलाइन समीक्षा प्रक्रिया से गुजरेंगी।
- सभी प्रतिभागी अन्य खानों की समीक्षा करके मूल्यांकन में योगदान दे सकते हैं।
- मूल्यांकन कोयला नियंत्रक संगठन द्वारा आयोजित किया जाएगा।
- प्रदान की गई रेटिंग फाइव स्टार से लेकर शून्य स्टार तक होती है, जो प्रत्येक खदान की उपलब्धियों के व्यापक मूल्यांकन को दर्शाती है।

कोयला के बारे में:

- कोयला, जिसे **'ब्लैक गोल्ड'** के नाम से जाना जाता है, तलछटी चट्टानों में पाया जाने वाला एक जीवाश्म ईंधन है।
- यह ऊर्जा के पारंपरिक और व्यापक रूप से उपलब्ध स्रोत के रूप में कार्य करता है।
- इसका अनुप्रयोग घरेलू ईंधन से लेकर लोहा और इस्पात, भाप इंजन और बिजली उत्पादन (थर्मल पावर) जैसे बिजली उद्योगों तक होता है।
- दुनिया भर में अग्रणी कोयला उत्पादकों में चीन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया और भारत शामिल हैं।
- भारतीय के कोयले में 35 से 45% की उच्च फ्लाई ऐश सामग्री होती है, जो वैश्विक औसत का लगभग 15% से अधिक है, लेकिन इसमें सल्फर की मात्रा लगभग 0.5% कम है।

वितरण:

- गोंडवाना कोयला क्षेत्र
- **आयु:** गोंडवाना कोयला क्षेत्र लगभग 250 मिलियन वर्ष पुराने हैं।
- **भंडार और उत्पादन:** गोंडवाना कोयला क्षेत्र भारत के कुल कोयला भंडार में 98% योगदान करते हैं और देश के कोयला उत्पादन में 99% योगदान करते हैं।
- **गुणवत्ता:** गोंडवाना कोयला अपने धातुकर्म ग्रेड और बेहतर गुणवत्ता के लिए जाना जाता है।
- **स्थान:** ये कोयला क्षेत्र दामोदर (झारखंड-पश्चिम बंगाल), महानदी (छत्तीसगढ़-ओडिशा), गोदावरी (महाराष्ट्र) और नर्मदा घाटियों जैसे क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

तृतीयक कोयला क्षेत्र

- **आयु**: तृतीयक कोयला क्षेत्र 15 से 60 मिलियन वर्ष पुराने हैं।
- **विशेषताएँ:** इनमें कार्बन की मात्रा कम होती है लेकिन नमी और सल्फर से भरपूर होते हैं।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

- **वितरण:** तृतीयक कोयला क्षेत्र मुख्य रूप से असम, मेघालय, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, **पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग,** राजस्थान, उत्तर प्रदेश और केरल सहित अतिरिक्त-प्रायद्वीपीय क्षेत्रों में केंद्रित हैं।

थिरुजनन संबंदर

संदर्भ: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तस्करी के शिकार 105 पुरावशेषों को वापस करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका को धन्यवाद दिया है, जिसमें शैव कवि-संत थिरुजनन संबंदर की 14-15 शताब्दी की मूर्ति भी शामिल है।

संबंदर:

- इन्हें तिरुज्ञान संबंदर के नाम से भी जाना जाता है,ये तमिलनाडु के 7वीं शताब्दी ईस्वी के एक शैव संत थे।
- वह एक प्रतिभाशाली बालक थे और केवल 16 वर्ष तक जीवित रहे लेकिन उन्होंने जटिल छंदों में 16,000 भजनों की एक प्रभावशाली रचना की।
- वर्तमान में उनकी रचनाओं में, 4,181 छंदों वाले 383 भजन ही शेष बचे हैं, जो हिंदू भगवान शिव के प्रति गहन भक्ति व्यक्त करते हैं।
- संबंदर की रचनाएँ तिरुमुरई के पहले तीन खंडों का हिस्सा हैं, जो शैव सिद्धांत की दार्शनिक नींव में योगदान करती हैं।
- उन्हें प्रमुख नयनार, तमिल शैव भक्ति संतों में से एक माना जाता है, और वह एक अन्य शैव संत, अप्पार के समकालीन थे।
- थिरुजनन संबंदर के बारे में जानकारी मुख्य रूप से पेरिया पुराणम् से मिलती है।

पेरिया पुराणम्

- पेरिया पुराणम् एक तमिल महाकाव्य है जो तमिल शैव धर्म के श्रद्धेय कवियों, तिरसठ नयनारों के जीवन का वर्णन करता है, जिन्होंने भगवान शिव की पूजा के लिए धार्मिक कविताओं की रचना की थी।
- इसे 12वीं शताब्दी के दौरान स्वयं एक भक्त सेक्किलहार द्वारा संकलित किया गया था, और यह शैव विहित कार्यों का हिस्सा बन गया।
- पेरिया पुराणम् अपने समय के दौरान पश्चिम एशिया के साथ व्यापार के बहुमूल्य ऐतिहासिक साक्ष्य प्रदान करते हैं।
- सेक्किलहार के तिरुट्टोंदार पुराणम् या पेरिया पुराणम् को तमिल में सबसे प्रमुख भौगोलिक पुराणों में से एक माना जाता है, जिसकी रचना कुलोत्तुंगा द्वितीय (1133-1150 ईस्वी) के शासन के दौरान की गई थी।

नयनार और अलवर

धार्मिक समूह	भाषा	अवधि	संतों की संख्या	प्रमुख संत	भक्ति फोकस	प्राथमिक साहित्य	मुख्य स्थान	साहित्यिक शैली
शैव (शिव के भक्त)	तामिल	5वीं से 9वीं शताब्दी ई.पू	63	अप्पार, संबंदर, सुंदरर	भगवान शिव की भक्ति	तिरुमुराई	तमिलनाडु और आसपास	कविताएँ और भजन
वैष्णव (विष्णु के भक्त)	तामिल	छठी से दसवीं शताब्दी ई.पू	12	नम्मलवार, पेरियालवार, अंडाल	भगवान विष्णु की भक्ति	कविता और गीत	तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश	कविता और गीत

यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन (यूपीयू)

सन्दर्भ: हालिया आधिकारिक बयान के अनुसार, यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन, वैश्विक डाक नेटवर्क के माध्यम से सीमा पार प्रेषण के साथ यूपीआई के एकीकरण का आकलन करेगा।

- यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन (यूपीयू) संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी है।
- यह डाक क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए प्राथमिक मंच के रूप में कार्य करता है।
- यूपीयू की स्थापना 1874 में बर्न की संधि द्वारा की गई थी।
- यह विश्व का दूसरा सबसे पुराना अंतर्राष्ट्रीय संगठन है।
- यूपीयू का अधिदेश डाक सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुंच सुनिश्चित करना है।
- यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन का मुख्यालय बर्न, स्विट्जरलैंड में स्थित है।

कार्य:

- यूपीयू सदस्य देशों और वैश्विक डाक प्रणाली के बीच डाक नीतियों का समन्वय करता है।
- यह अंतर्राष्ट्रीय मेल एक्सचेंजों के लिए नियम निर्धारित करता है और मेल, पार्सल और वित्तीय सेवाओं आदि के विकास के लिए रणनीतियों की सिफारिश करता है।
- यूपीयू सभी के लिए नवीनतम उत्पादों और सेवाओं का एक सार्वभौमिक नेटवर्क सुनिश्चित करता है।
- यह आवश्यकतानुसार तकनीकी सहायता के साथ-साथ सलाह, मध्यस्थता और संपर्क सेवाएँ प्रदान करता है।

सदस्यता:

- यूपीयू में सदस्यता किसी भी संयुक्त राष्ट्र सदस्य देश के लिए खुली है।
- गैर-संयुक्त राष्ट्र सदस्य देश इसमें शामिल हो सकते हैं यदि उनके अनुरोध को कम से कम दो-तिहाई यूपीयू सदस्य देशों द्वारा अनुमोदित किया जाता है।
- वर्तमान में यूपीयू के **192 सदस्य देश** है।

संरचना:

- **कांग्रेस:** यूपीयू का सर्वोच्च प्राधिकारी है और प्रत्येक चार वर्ष में बैठक करता है।
- **प्रशासन परिषद:** कांग्रेस सत्रों के बीच यूपीयू गतिविधियों की देखरेख करता है और नियामक, प्रशासनिक, विधायी और कानूनी मामलों को संबोधित करता है।
- **डाक संचालन परिषद:** इसमें कांग्रेस के दौरान चुने गए 48 सदस्य देश शामिल हैं, यूपीयू के तकनीकी और परिचालन पहलुओं को संभालते हैं।
- **अंतर्राष्ट्रीय ब्यूरो:** यह सचिवालय के रूप में कार्य करता है, यूपीयू निकायों को साजो-सामान और तकनीकी सहायता प्रदान करता है।

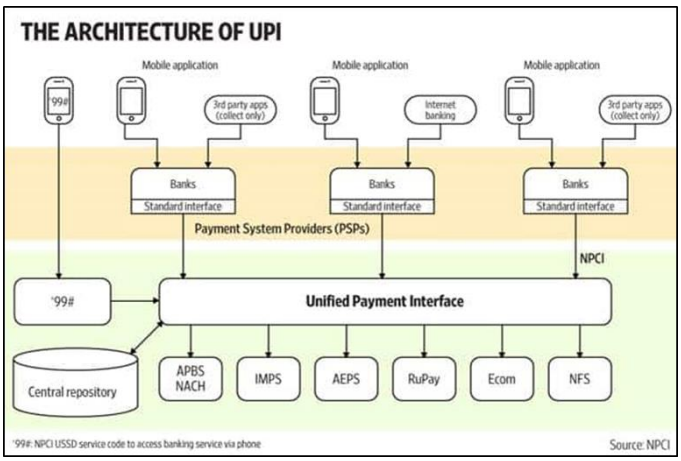

NEWS IN BETWEEN THE LINES

अंतर्राष्ट्रीय चंद्रमा दिवस

संदर्भ: चंद्रमा पर पहली बार मानव के कदम रखने की याद में 20 जुलाई को अंतर्राष्ट्रीय चंद्रमा दिवस मनाया जाता है, जिसे मानव इतिहास की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक माना जाता है।

संयुक्त राष्ट्र की मान्यता: संयुक्त राष्ट्र ने 1971 में इस दिन को मनाने का निर्णय लिया था।

अपोलो मिशन दर्पण: अपोलो 11, अपोलो 14 और अपोलो 15 मिशन के अंतरिक्ष यात्रियों ने चंद्रमा की सतह पर दर्पण छोड़े, जो प्रकाश की गति को सटीक रूप से मापने के लिए वैज्ञानिक उपकरण के रूप में काम कर रहे थे।

बज़ लाइटइयर: पिक्सर की "टॉय स्टोरी" श्रृंखला में एक पात्र का नाम बज़ एल्ड्रिन के नाम पर रखा गया था, जो चंद्रमा पर चलने वाले दूसरे व्यक्ति थे, जो चंद्रमा पर उतरने के सांस्कृतिक प्रभाव को दर्शाता है।

चंद्र कविता: एमिली डिकिंसन की अत्यंत सुंदर कविता "द मून" (या "नोक्टर्न") चंद्रमा की रहस्यमय उपस्थिति का स्पष्ट रूप से वर्णन करती है।

मारे ट्रैंक्विलिटैटिस: ट्रैंक्विलिटी का सागर (मारे ट्रैंक्विलिटैटिस) अपोलो 11 के लिए प्रसिद्ध लैंडिंग स्थल था, जहां नील आर्मस्ट्रांग और बज़ एल्ड्रिन ने चंद्रमा पर कदम रखा था।

नमामि गंगे

संदर्भ: हाल ही में उत्तराखंड के चमोली जिले में नमामि गंगे परियोजना के तहत सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) में एक दुखद घटना घटी।

नमामि गंगे कार्यक्रम:

नमामि गंगे कार्यक्रम जून 2014 में भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक एकीकृत संरक्षण मिशन है। यह जल शक्ति मंत्रालय के तहत एक प्रमुख कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य प्रभावी प्रदूषण उन्मूलन और राष्ट्रीय नदी गंगा के संरक्षण और कायाकल्प के दोहरे उद्देश्यों को प्राप्त करना है।

कार्यान्वयन प्राधिकरण: जल शक्ति मंत्रालय के तहत एनएमसीजी और एसपीएमजी द्वारा संचालित।

चरण 2 फोकस: परियोजना पूर्णता, आर्द्रभूमि पुनरुद्धार और टिकाऊ नीतियों पर ध्यान देना।

मुख्य स्तंभ: सीवेज उपचार, नदी तट विकास, जैव विविधता, जागरूकता एवं अन्य।

संबंधित पहल: गंगा एक्शन प्लान, एनआरजीबीए, स्वच्छ गंगा फंड, अपशिष्ट निपटान प्रतिबंध और भुवन-गंगा वेब ऐप के साथ सार्वजनिक निगरानी।

प्राचीन शिकारी

संदर्भ: हाल ही में, चीन में एक दुर्लभ जीवाश्म की खोज से पता चला है कि अतीत में स्तनधारियों ने अपने भोजन के लिए डायनासोर का शिकार किया होगा।

खोज: इस जीवाश्म में एक बिज्जू जैसा स्तनपायी जीव अपने कंकालों को आपस में गुंथे हुए एक छोटे, चोंच वाले डायनासोर पर हमला करता हुआ दिखाई देता है।

स्थान: यह खोज "चीन के पोम्पेई" नामक स्थान पर हुई है, जहां ज्वालामुखी गतिविधि के कारण जीव मिट्टी और मलबे में दब गए थे।

प्रागैतिहासिक शिकार: यह जीवाश्म एक प्रागैतिहासिक शिकार को दर्शाता है, जो लगभग 125 मिलियन वर्ष पहले, क्रेटेशियस काल के दौरान, फ्रीज फ्रेम की तरह पत्थर में जमा हुआ था।

महत्व: यह खोज उस धारणा को चुनौती देती है कि डायनासोर के युग के दौरान डायनासोर ने दुनिया पर शासन किया था, जबकि स्तनधारी कमजोर थे। इससे पता चलता है कि कुछ स्तनधारियों ने सक्रिय रूप से डायनासोर का शिकार किया होगा, यहां तक कि अपने से बड़े जानवरों का भी।

जीवाश्म की प्रामाणिकता: अध्ययन के लेखक जीवाश्म में हेर-फेर की संभावना को स्वीकार करते हैं, लेकिन आश्वस्त हैं कि 2012 में एक किसान द्वारा खोजा गया यह जीवाश्म सावधानीपूर्वक तैयारी और चट्टान के नमूनों के विश्लेषण के बाद वास्तविक है।

जीपीयू: एआई और उससे आगे का रूपांतरण

संदर्भ: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को वैश्विक परिदृश्य पर ग्राफ़िक्स प्रोसेसिंग इकाइयों (जीपीयू) के उद्भव से बढ़ावा मिला है।

ग्राफ़िक्स प्रोसेसिंग इकाइयाँ (GPU):

ग्राफिक्स प्रोसेसिंग इकाइयाँ (जीपीयू) विशेष इलेक्ट्रॉनिक सर्किट या प्रोसेसर हैं जिन्हें कंप्यूटर, गेमिंग कंसोल और अन्य उपकरणों में ग्राफिक्स रेंडरिंग कार्यों को तेज करने और बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

GPU का AI प्रभाव: ग्राफ़िक्स प्रोसेसिंग यूनिट्स (GPUs) ने विश्व स्तर पर AI में क्रांति ला दी है। मूल रूप से ग्राफिक्स कार्यों के लिए, जीपीयू समानांतर गणना निष्पादित करके, बड़े डेटासेट के साथ एआई मॉडल को आगे बढ़ाकर गहन सीखने में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं।

सीपीयू बनाम जीपीयू: सीपीयू विलंबता-उन्मुख और कार्य-समानांतर हैं, जबकि जीपीयू थ्रूपुट-उन्मुख और डेटा-समानांतर हैं। जीपीयू के मैट्रिक्स ऑपरेशन उन्हें एआई के लिए आदर्श बनाते हैं।

एफपीजीए: फील्ड प्रोग्रामेबल गेट एरेज़ (एफपीजीए) एआई अनुकूलन की पेशकश करते हैं लेकिन जीपीयू की तुलना में प्रोग्राम करना कठिन होता है।

Face to Face Centres

DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

dhyeyaias.com

डिजिटल टाइम वाउचर

संदर्भ: हाल ही में, भारत निर्वाचन आयोग ने चुनावों के दौरान दूरदर्शन और ऑल इंडिया रेडियो पर राजनीतिक दलों के प्रचार के लिए डिजिटल टाइम वाउचर पेश किए।

टाइम वाउचर मूल्यवर्ग: राजनीतिक दलों को दूरदर्शन पर प्रसारण और आकाशवाणी पर प्रसारण के लिए 5 मिनट और 10 मिनट के डिजिटल टाइम वाउचर मिलते हैं।

प्रतिनिधि आवंटन: पार्टियां दूरदर्शन या आकाशवाणी पर प्रति प्रतिनिधि अधिकतम 20 मिनट के साथ प्रतिनिधियों का चयन कर सकती हैं।

योजना की पृष्ठभूमि: चुनाव प्रचार के लिए सरकारी स्वामित्व वाले इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तक समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए यह योजना 1998 में जन प्रतिनिधित्व अधिनियम के तहत शुरू की गई थी।

समय आवंटन का आधार: पार्टियों को पिछले विधानसभा या आम चुनावों में उनके चुनाव प्रदर्शन के आधार पर अतिरिक्त समय के साथ, दूरदर्शन और एआईआर पर एक समान समय मिलता है।

पूर्व निर्धारित प्रसारण: प्रसार भारती निगम, ईसीआई और राजनीतिक दल के प्रतिनिधियों के परामर्श से, एक लॉट प्रक्रिया के माध्यम से प्रसारण पूर्व निर्धारित करता है।

समाचार में स्थान

इरिओमोटे द्वीप

संदर्भ: हाल ही में, जापान के इरिओमोटे द्वीप के पास एक कॉलोनी ने प्रवाल विरंजन कार्यक्रम के दौरान लचीलापन दिखाया। 2016 में विरंजन के बावजूद, 2020 तक सुधार के संकेत देखे गए।

भौगोलिक स्थिति: इरिओमोटे द्वीप जापान में ओकिनावा प्रान्त के हिस्से, येयामा द्वीप समूह में स्थित है। यह यायामा द्वीपसमूह में सबसे बड़ा और सबसे दक्षिणी बसा हुआ द्वीप है।

अनोखा पारिस्थितिकी तंत्र: "पूर्व के गैलापागोस" के नाम से मशहूर इस द्वीप में हरे-भरे जंगल, मैंग्रोव वन और विविध वन्य जीवन हैं।

लुप्तप्राय प्रजातियाँ: गंभीर रूप से लुप्तप्राय इरिओमोट बिल्ली विशेष रूप से इस द्वीप पर निवास करती है।

राष्ट्रीय उद्यान: इरिओमोटे द्वीप, इरिओमोटे-इशिगाकी राष्ट्रीय उद्यान का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य इसके अद्वितीय पारिस्थितिकी तंत्र और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना है।

प्रवाल विरंजन: प्रवाल विरंजन विश्व स्तर पर प्रवाल भित्तियों को प्रभावित करती है, जिससे पारिस्थितिक और सामाजिक-आर्थिक परिणाम होते हैं।

संरक्षण के उपाय: द्वीप वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत संरक्षित है और संरक्षण प्रयासों के लिए वित्तीय सहायता द्वारा समर्थित है। वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो अवैध शिकार और अवैध वन्यजीव व्यापार के खिलाफ कार्यवाही करता है।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com